सोता था. जातेही जो इसने उसे अचानक जगाया, तो वह घबराकर उठा; और कहने लगा तू देवकन्या है, कि ऋषिकन्या, या नागकन्या है? सच कह, तू कौन है? और मेरे पास कहां से आई है? वह बोली कि मैं नरकन्या हूं. और हिरन्यदत्त सेठ की बेटी. मदनसेना मेरा नाम है. और तुझे याद नहीं जो उस उपबन में तू ज़बरदस्ती मेरा हाथ पकड़ के क़सम को बजिद हुआ था. और मैंने, बमूजिब तेरे कहने के, यह सोगंद की थी कि बिवाहता पुरुष को त्याग करके तेरे पास आऊंगी. सो मैं आई हूं. जो तेरी इच्छा में आवे सो कर.

फिर उनने पूछा कि यह तूने वृत्तांत अपने पति के आगे कहा या नहीं. इनने उत्तर दिया कि मैंने तमाम अहवाल कहा. और उनने सब दरियाफ़त करके मुझे तेरे पास बिदा किया. सोमदत्त बोला यह बात ऐसे है, जैसे बिना बस्त्र का गहना, या बिना घीके भोजन, या बग़ैर सुर के गाना, यह सब एक सा है. इसी तरह, मैले बसन तेज को हरे, कुभोजन बल को, कुभार्या प्राण को, कुपुत्र कुल को हरे. और राक्षस ख़फ़ा होता है तो प्राण को लेता है, पर स्त्री, हित और अहित में दोनों तरह से, दुख देनेवाली है. स्त्री जो न करे सो थोड़ा. क्योंकि जो बात इस के मन में रहती है, सो ज़बान पर नहीं लाती; और जो ज़बान में है, उसे ज़ाहिर नहीं करती; और जो करती है सो कहती नहीं. स्त्री को संसार में भगवान ने अजब कोई पैदा किया है.

इतनी बातें कह, उस सेठ के बेटे ने इसे जवाब दिया कि मैं पराई औरत से इलाक़ः नहीं रखता. यह सुनके फिर उलटी अपने घर को चली. राह में उस चोर से भेंट हुई. उसके आगे सब वृत्तांत कहा. चोरने सुनके शाबाशी दे छोड़ दिया. यह अपने पति के निकट आई; और उसे तमाम अहवाल बयान किया. पर उसके खाविंद ने उसे प्यार न किया; और कहा, कोयल का सुरही रूप है, और नारीका रूप पतिबरत, और कुरूप मनुष का रूप बिद्या, तपसी का रूप क्षमा.

इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा! इन तीनों में से किसका सत अधिक है? राजा बिक्रमाजीत ने कहा चोर का सत अधिक है. बैताल ने कहा किस तरह? राजा ने कहा और पुरुष पर उसकी इच्छा देख स्वामी ने छोड़ा. राजाका डर मान सोमदत्तने छोड़ा. और चोरको छोड़ने का कुछ कारन न था. इस से चोरही प्रधान है. यह सुन, बैताल फिर रूख में जा लटका. और राजा भी वहां जा, उसे दरख़त से उतार, बांध कांधे पर रख, फिर ले चला.

दसवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! गोड़ (१) देस में बरदमान एक नगर है. और गुणशेखर नाम वहां का राजा था. उसका मंची एक सरावगी अभैचंद (२) नाम था. उसके

(१) गौड़. (२) अभयचन्द्र.

समझानेसे राजा भी स्रावक धर्म में आया. शिवकी पूजा, विषनूकी पूजा, और गौदान, भूमिदान, पिंडदान, जूआ, और मदिरा इन सब को मनअ किया. नगर में कोई करने न पावे. और हाड़ गंगा में कोई न ले जावे. और इन बातों की, दीवान ने भी, राजा से आज्ञा ले, डौंडी नगर में फिरवा दी ; कि जो कोई ये कर्म करेगा उसका सरबस राजा छीन ले, सज़ा दे, शहर से निकाल देगा.

फिर एक दिन दीवान राजा से कहने लगा कि महाराज ! धर्म का बिचार सुनिये. जो कोई किसू का जी लेता है, वह और जन्म में उसका भी जी लेता है. इसी पाप से, संसार में आनके, मनुष का जीवन मरन नहीं छुटता. फिर फिर जनम लेता है, और मरता है. इससे, जगत में जन्म पाके, धर्म बटोरना मनुष को उचित है. देखिये, काम, क्रोध, लोभ, मोह बस हो बिरह्मा, बिषनू, महादेव किसू न किसू तौर से, संसार में औतार ले ले आते हैं. बल्कि उनसे गाय अच्छी है, जो राग, द्वेष, मद, क्रोध, लोभ, मोह से रहित है, और प्रजा की रचा करे है. और उसके जो पुच होते हैं वेभी जगत के जीवों को अच्छी तरह से सुख दे पालते हैं. इससे देवता और मुनि सब गौको मानते हैं. इस लिये, देवताओं को मानना अच्छा नहीं. इस जगत में गाय को मानिये. और हाथी से लगा चौंटी, और पशु, पंछी, नर तक हर एक जी की रचा करना धर्म है. जहान में उसके समान कोई धर्म नहीं. जो नर, बिराने मांस को खा, अपना मांस बढ़ाते हैं, सो

अंत काल में नर्क भोग करते हैं. इससे मनुष को उचित यह है कि जी की रचा करे. जो लोग कि बिराना दुख न समझते हैं, और ग़ैरों के जी मार मार खाते हैं ; उनकी इस पृथवी में उमर कम होती है ; और लूले, लंगड़े, काने, अंधे, बौने, कुबड़े, ऐसे अंगहीन हो हो जन्म लेते हैं. जैसे पशु और पंछी के अंग खाते हैं वैसेही अनत अपने अंग गवांते हैं. और मद पान करने से महा पाप होता है. इससे मद मांस का खाना उचित नहीं.

इस तरह से, दीवान राजा को, अपने मतका ज्ञान समझा, ऐसा जैन धर्म में लाया कि जो यह कहता था वही राजा करता था ; और बिराह्मण, योगी, जंगम, सेवड़ा, सन्यासी, दरवेश किसी को न मानता था ; और इसी धर्म से राज करता था. एक दिन काल के बसहो मर गया. फिर उसका बेटा, धर्मध्वज नाम, गद्दी पर बैठा और राज करने लगा. एक दिन, उसने अमैचंद दीवान को पकड़वा, सिर पर सात चोटियां रखवा, मुंह काला करवा, गधे पर चढ़ा, डौंडी बजवा, ताली दिलवा, देस निकाला दिया और अपना राज निकंटक किया.

एक दिन वह राजा, बसंत ऋतु में रानियों को साथ ले, एक बाग़ की सैर को गया. उस बाग़ में एक बड़ा तालाब था. और उस में कंवल फूल रहे थे. राजा, उस सरोवर की सोभा देख, कपड़े उतार, स्नान करने को उतरा. एक फूल तोड़, तीर पर आ, रानी के हाथ में देने लगा ; कि इस में हाथ से वह छूटकर रानी के पांव

पर गिरा. और उसकी चोट से, रानी का पांव टूट गया. तब राजा, घबराकर, एक बारगी बाहर निकल, उसकी औषध करने लगा; कि इस में रात हुई; और चंद्रमा ने प्रकाश किया. चांद की जोत के पड़तेही, दूसरी रानी के शरीर में फफोले पड़ गये; कि अचानक दूरसे किसी गृहस्थी के घर से मूसल की आवाज़ आई; वोंहीं तीसरी रानी के सिर में ऐसा दर्द हुआ कि गश आ गया.

इतनी बात कह, बैताल बोला ऐ राजा! इन तीनों में अति सुकमार कौन है? राजा ने कहा जिस के सिर में पीर हो मूर्छा आई, सोई बहुत नाज़ुक है. यह बात सुन, बैताल फिर उसी वृक्ष में जा लटका. और राजा वहां जा, उसे उतार, गठरी बांध, कांधे पर रख ले चला.

ग्यारहवीं कहानी

बैताल बोला कि ऐ राजा! पुन्यपुर(१) नाम एक नगर है. तहां का बल्लभ नाम राजा था. और उसके मंत्री का नाम सत्यप्रकाश. उस मंत्री की स्त्री का नाम लक्ष्मी. उस राजा ने एक रोज़ अपने दीवान से कहा, जो राजा होकर सुंदर स्त्री से ऐश न करे तो राज करना उसका निर्फल है. यह बात कह, दीवान को राज का भार दे, आप सुख से ऐश करने लगा. राज की चिन्ता सब छोड़ दी; और दिन रात आनंद में रहने लगा.

(१) पुण्यपुर.

इत्तिफ़ाक़न, एक रोज़ वह मंत्री अपने घर में उदास बैठा था, कि इस में उसकी भार्या ने पूछा स्वामी! इन दिनों आप को बहुत दुर्बल देखती हूं. वह बोला कि निस दिन मुझे राज की चिन्ता रहती है. इससे शरीर दुर्बल हुआ है. और राजा आठ पहर अपने ऐश आराम में रहता है. वह मंत्री की जोरू बोली कि हे पति! बहुत दिन तुमने राजकाज किया. अब थोड़े दिनों के लिये, राजासे बिदा हो, तीर्थ यात्रा करो.

यह बात उसकी सुन, चुपका हो रहा. फिर जब वहां से उठा, तो वक़्त दरबार के, राजा के पास जा, रुख़्सत ले, तीर्थ यात्रा करने निकला. जाते जाते समुद्र तीर सेतबंद रामेश्वर(१) जा पहुंचा. वहां जातेही महादेव का दर्शन कर बाहर निकला था; कि इत्तिफ़ाक़न, नज़र उसकी समुद्र की तरफ़ जा पड़ी; तो क्या देखता है, कि एक ऐसा कंचन का पेड़ उस में से निकला कि जिसके ज़मुर्रुद के पत्ते, पुखराज के फूल, मूंगे के फल, निहायत ख़ुशनुमा नज़र आया. और उस दरख़्त पर, अति सुन्दर नायका, बीन हाथ में लिये, मधुर मधुर कोमल कोमल सुरों से बैठी गाती है. बअ्द एक घड़ी के, वह तरवर समुद्र में लोप हो गया.

यह तमाशा मंत्री वहां देख, उलटा फिर, अपने नगर में आया; और राजा के पास जा दंडवत कर, हाथ जोड़ बोला महाराज! मैं एक अचरज देख आया हूं. राजा ने

(१) सेतुबन्धरामेश्वर.